सिंगापुर में हिंदी का विकास

सुश्री उदीची पाण्डेय

हिंदी सोसाइटी की स्थापना को 25 वर्ष हो चुके हैं। हम सभी इस वर्ष हिंदी सोसाइटी की रजत जयंती मना रहे हैं। हिंदी सोसाइटी की सफलतापूर्वक स्थापना में कई लोगों का योगदान रहा। हमारे विद्यार्थी प्रति वर्ष बढ़ते रहे और आज यदि हम देखें तो 25 वर्षों के बाद उनकी संख्या 99 से बढ़कर 3081 हो गई है।

1920-1940 में हिंदी भाषी लोग कहीं एकत्रित होकर बच्चों को हिंदी की शिक्षा दिया करते थे।

1930 में आर्य समाज मंदिर में हिंदी की कक्षाएँ चलाई जाती थीं। इन कक्षाओं में बच्चों को छोटे-छोटे समूहों में पढ़ाया जाता था। 1964 में एक विद्यालय खुला जिसका नाम DAV था, जहाँ बच्चों को मुफ़्त शिक्षा दी जाती थी। पहले के समय में आये हुए जितने भी भारतीय हैं उनमें से अधिकांश लोगों ने मजबूरी में ही सही परंतु चाइनीज़ और मलय बोलना सीख लिया।

13 जुलाई 1990 के एक समाचार पत्र में रिपोर्ट प्रकाशित हुई जिसमें इस बात का ज़िक्र किया गया था कि Indian Singaporean विद्यार्थियों का शैक्षिक-प्रदर्शन अच्छा नहीं था।

इसका कारण यह बताया गया कि सिंगापुर में जो तीन मुख्य भाषाएँ थीं चाइनीज़, मलय और तमिल, विद्यार्थियों को उन्हीं में से किसी एक का चुनाव करना था। जो कि उनकी मातृभाषा नहीं थी। जिसके कारण बहुत से बच्चे इस समस्या से जूझ रहे थे।

उसके बाद NTIL का गठन हुआ और उसमें प्रत्येक भाषा के किसी एक व्यक्ति द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया। NTIL के अंतर्गत पाँच मुख्य भाषाएँ आती हैं: बंगाली, गुजराती, पंजाबी, हिंदी और उर्दू।

1989 मेंसिंगापुर के शिक्षा मंत्री द्वारा यह घोषित की गई कि माध्यमिक कक्षाओं के बच्चे NTIL भाषाओं में से किसी एक भाषा को द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ सकते हैं।

उसके बाद एक और कमेटी बनाई गई जिसमें इस बात पर शोध किया गया कि क्या यह प्राथमिक विद्यार्थियों के लिए भी संभव हो सकता है?

1989 में ही The Hindi Society (Singapore) की स्थापना हुई। 1992 की वार्षिक पत्रिका में उस समय Hindi Society के लिए यह परिकल्पना की गई थी कि हमारी अपनी एक ऐसी इमारत हो जहाँ पर हम बच्चों के लिए काफी सारी गतिविधियाँ आयोजित कर सकें।

शुरूआती दौर में बच्चों को लिखने से ज़्यादा बोलने पर ज़ोर दिया जाता था। पुस्तकें भी उतनी ज़्यादा उपलब्ध नहीं थीं। उस समय पुस्तकें भारत से ही मंगाई जाती थीं। लेकिन इसका दुष्परिणाम यह था कि

पाँचों NTIL भाषाओं में अलग-अलग पुस्तकें और अलग-अलग बातें सिखाई जाने लगीं। सभी अपने-अपने ढंग से पढ़ा रहे थे।

उस समय तक बच्चों के प्राप्तांक उनके परिणाम पत्र में भी नहीं जुटते थे। क्योंकि तब तक सारी NTIL भाषाओं में समानता नहीं थी।

1998 से कुछ कक्षाओं के लिए Common Examinations शुरू हुए। विशेष रूप से PSLE और O-Level के स्तर पर ये परीक्षाएँ शुरू की गईं।

23 जुलाई 2000 में बच्चों का गणवेश बनाया गया। 2000 में ही पहली बार रंगीन वार्षिक पत्रिका बनाई गई। अभ्यास पुस्तिकाएँ बनाई गईं। जिससे बच्चों का ज़्यादा से ज़्यादा लिखित अभ्यास करवाया जा सके।

वर्ष 2000 में सभी कक्षाओं की एक साथ परीक्षा आयोजित की गई और उनके परीक्षा-पत्रों की जाँच के लिए एक केंद्र निर्धारित किया गया जहाँ पर सभी भाषाओं के परीक्षा-पत्रों की एक साथ जाँच की गई। यह प्रक्रिया इसलिए भी शुरू की गई ताकि सभी भाषाओं में समान स्तर बना रहे।

हिंदी शिक्षा का बदलता स्वरुप

पहले के समय में लोगों का मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषी लोगों को इकट्ठा करना था। पहले लोगों ने जब विदेशों में आगमन किया तब उस समय शायद लक्ष्य सिर्फ रोजी-रोटी ही कमाना था। धीरे-धीरे जब रहन-सहन का स्तर सुधरा तब उन्हें अपनी मातृभाषा और मातृभूमि का ध्यान आया। उन्होंने अपनी पहचान और अपनी मातृभाषा को बचाए रखने के लिए कई प्रकार की कोशिशें शुरू की।

जब 1990 में हिंदी सोसाइटी की स्थापना हुई तब उस समय हिंदी बोलने या पढ़ने की यह स्थिति थी कि वे सभी लोग जो हिंदी के जानकार थे उन्हें बुलाकर हिंदी के पठन-पाठन के लिए भी एक प्रकार का दबाव देना पड़ता था। तब बच्चों की संख्या 99 थी। धीरे-धीरे सिंगापुर में भारतीयों की संख्या बढ़ने के कारण हिंदी पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या में भी बढ़ोत्तरी हुई।

समय-समय पर शैक्षणिक तरीके बदलते रहे और लोगों में भी शिक्षा देने के तरीकों में काफी सुधार हुआ। पहले सभी अपनी इच्छानुसार अलग-अलग तरीके से पढ़ाते रहे फिर यह तय किया गया कि जो भी शिक्षा दी जा रही है वह कम से कम एक जैसी होनी चाहिए। उसके बाद कुछ सालों तक भारत से पुस्तकें मँगवाई गईं। बच्चों ने काफी सालों तक बाल-भारती और ज्ञान-सुधा पुस्तकें भी पढ़ीं। जब 2007 में हमें सरकार की तरफ से आर्थिक मदद मिली तब हमें भी अपने आप को साबित करना था कि हम जिस NTIL

के अंतर्गत काम कर रहे हैं उसकी सारी भाषाओं में शिक्षा का समान स्तर है और फिर NTIL के अंतर्गत अपनी पुस्तकें बनाई गईं।

प्रत्येक समूह से कुछ अध्यापिकाओं को लेकर प्रत्येक कक्षा के लिए पुस्तकों का निर्माण किया गया। उन अध्यापिकाओं में से मैं भी एक हूँ। वे हमारी एक उपलब्धि थी। यह अलग बात है कि पुस्तकें बन जाने के बाद उनके बारे में बहुत सारे अभिभावकों के सकारात्मक और नकारात्मक विचार भी सुनने में आए।

उदाहरण – इन पुस्तकों में कोई कविता या भारत के किसी महान व्यक्ति के बारे में कोई ज़िक्र नहीं था। लेकिन इन पुस्तकों को बनाने में बहुत सारी अच्छी बातों का भी ध्यान रखा गया। जैसे – यदि हम प्राथमिक एक की पुस्तक को देखें तो इसका पहला पृष्ठ वर्णमाला से शुरू नहीं होता। इसके पीछे कुछ सोच या लोगों के अपने विचार हैं।

अब यहाँ पर बात सिर्फ हिंदी सिखने की नहीं है। अब जब बच्चों के अंक परीक्षाओं में जुड़ने लगे हैं तब हमें इस बात पर ध्यान देना होता है कि उनकी हिंदी की पढ़ाई का स्तर और सिंगापुर के स्तर में समानता हो। वह इस प्रकार हो कि विद्यार्थियों को परीक्षा में अच्छे अंक भी प्राप्त हों।

पहले जब बच्चों ने हिंदी पढ़ना शुरू किया तो उनका उद्देश्य सिर्फ हिंदी बोलने वाले वातावरण में तीन-चार घंटे व्यतीत करना था। जब बच्चों के अंक जुड़ने की शुरुआत हुई तब माता-पिता की चिंता भी शुरू हुई।

हमारे यहाँ बहुत से बच्चे ऐसे हैं जिन्होंने कभी भारत ही नहीं देखा है और उन्हें भारत के बारे में बताना कभी-कभी असंभव सा हो जाता है। यदि वे भारत के बारे में कुछ जानते हैं तो वह भी दूरदर्शन के माध्यम से। हिंदी सोसाइटी में हमने बहुत से दूसरे तरह के कार्यक्रम भी शुरू किए हैं जिससे बच्चों का पाठ्यक्रम रुचिकर हो जाए।

जैसे – शो ऐंड टेल, (स्पीकिंग ऐंड रीडिंग एसेसमेंट) स्टोरी टेलिंग, स्पीच एंड ड्रामा, एक साल में तीन बार अलग-अलग कक्षाओं के लिए एनरिचमेंट का कार्यक्रम आदि।

हिंदी शिक्षा देने के विभिन्न प्रकार

ICT PORTAL

प्राथमिक कक्षाओं के लिए ICT PORTAL का प्रयोग होता है जिसमें बच्चे वर्णमाला, समानार्थी, विलोम आदि का अभ्यास घर पर बैठे-बैठे कर सकते हैं।

रंगीन काड्र्स का प्रयोग

काड्र्स पर अपने बारे में लिखकर देना और बिना एक दूसरे की जान-पहचान के अपने सहपाठी के बारे में जानना।

रंगीन काड्र्स के प्रयोग द्वारा कक्षा में बच्चों की बातें समझ पाना।

निबंध पढ़ाने के लिए काड्र्स का प्रयोग होना।

हम बच्चों को ज़्यादा से ज़्यादा तस्वीरों के साथ पढ़ाना चाहते हैं ताकि वे उस विशेष विषय के बारे में कल्पना कर सकें।

फ्लैश काड्र्स का प्रयोग

छोटी कक्षाओं में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि बच्चों को कम से कम पुस्तकें देखनी पड़ें और ज़्यादा से ज़्यादा वे चित्रों के माध्यम से पढ़ें। फ्लैश काड्र्स का प्रयोग हम कई प्रकार से करते हैं। जैसे – गिनती, रंगों की पहचान, आकार का ज्ञान आदि।

त्योहार

होली, रक्षा-बंधन, दशहरा, दीपावली, राष्ट्रीय दिवस आदि के बारे में बच्चों को पूरी जानकारी दी जाती है।

माध्यमिक कक्षाएँ – माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों को मुख्य रूप से निबंध लेखन में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। जो हमारी पुरानी अध्यापिकाएँ हैं वे अब सिंगापुर की शिक्षा प्रणाली के अनुसार बच्चों को समझा पाने में काफी हद तक सफल हो पाती हैं जब कि नई अध्यापिकाओं को यह समझा पाना बहुत मुश्किल होता है कि वे सिंगापुर के बच्चों से क्लिष्ट हिंदी के प्रयोग की उम्मीद न करें। कभ-कभी दिक्कत यह होती है कि अध्यापिकाएँ बच्चों के हिसाब से नहीं बल्कि अपने ज्ञान के अनुसार बच्चों को शिक्षा देती हैं जो कि बच्चों के लिए समझ पाना असंभव होता है।

दूसरी समस्या जिसका सामना हमें करना होता है, वह होता है अध्यापिकाओं का लम्बे समय तक सिंगापुर में न रुक पाना। हमारी अधिकांश अध्यापिकाएँ DP पर होती हैं। जब तक थोड़ा बहुत वे खुद को तैयार कर पाती हैं तब तक उनका सिंगापुर से स्थानान्तरण हो जाता है।

हमारी हिंदी सोसाइटी में लगभग 135 अध्यापिकाएँ हैं। वर्ष 2014 में हमारे यहाँ विद्यार्थियों की कुल संख्या 3081 हो गई। ये बढ़ती हुई संख्या उन विद्यार्थियों की ज़्यादा है जो कुछ ही सालों के लिए सिंगापुर में रहते हैं। हमारे यहाँ जो भी विद्यार्थी हैं उनमें से सिर्फ 20 प्रतिशत ही ऐसे हैं जो हिंदी बोलते हैं। बाकी बच्चे भारत के अलग-अलग प्रांतों से हैं। उनके लिए या फिर उनके माता-पिता के लिए हिंदी विदेशी भाषा जैसी ही है। वे भी अपने बच्चों के साथ बहुत परिश्रम करते हैं। उनकी उम्मीदें अध्यापिकाओं से बहुत ज़्यादा होती हैं। यदि बच्चों के परिणाम अच्छे नहीं आए तो अभिभावक मायूस भी हो जाते हैं।

उनका मुख्य उद्देश्य हिंदी सीखना नहीं बच्चों को अच्छे अंक दिलाना है। अंकों के चक्कर में माता-पिता यह भूल जाते हैं कि सर्वप्रथम बच्चे का हिंदी भाषा को पसंद करना आवश्यक है। हमारी पूरी कोशिश है कि हम बच्चों को हिंदी भाषा के साथ-साथ अपनी संस्कृति से भी जोड़कर रख सकें।

मुख्य अध्यापिका, हिंदी सोसाइटी सिंगापुर
महात्मा गांधी मेमोरियल
3 रेस कोर्स लेन
सिंगापुर 218731
hindi@singnet.com.sg